

भारत में राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद एक भावना है जो किसी विशेष भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण में रहने वाले लोगों के बीच प्रेम एवं एकता का संचार करती है।

राष्ट्रवाद के उदय के कारण

लार्ड लिटन की नीति

- 1878 का वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट जिससे देशी प्रेस पर दंडात्मक कारवाई।
- 1879 का आर्म्स एक्ट।

लार्ड रिपन की नीति

- 1883 का इल्बर्ट बिल का यूरोपीयों द्वारा विरोध जिसके माध्यम से फौजदारी मुकदमों की सुनवाई भारतीय न्यायधीश कर सकते थे।

लार्ड कर्जन की नीति

- 1899 में कलकत्ता कॉरपोरेशन एक्ट जिससे नगरपालिका में गैर निर्वाचित सदस्यों की संख्या में वृद्धि।
- 1904 का विश्वविद्यालय अधिनियम।
- 1905 में बंगाल विभाजन जिसका उद्देश्य हिन्दू-मुस्लिम एकता को तोड़ना था। विभाजन 16 अक्टूबर 1905 को लागू एवं 1911 में रद्द।

लार्ड डलहौजी का संरचनात्मक प्रयास— रेलवे, टेलीग्राफ, व्यवस्थित परिवहन जिससे दूरियाँ कम होने लगी एवं वैचारिक आदान-प्रदान होने लगे।

आर्थिक कारण

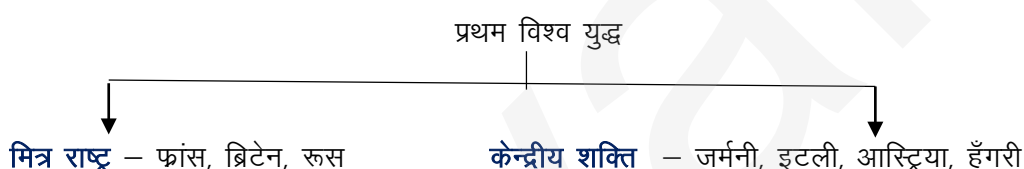
- भारत से कच्चे माल का निर्यात।
- भारत में निर्मित वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिबंध एवं आयातित वस्तुओं पर से आयात कर हटाया गया।
- कृषि एवं कुटीर उद्योग का विनाश।
- धन के निष्कासन का सिद्धान्त दादा भाई नौरोजी ने दिया था।

समाजिक कारण

- प्रजातीय भेदभाव की नीति।
- सरकारी सेवाओं में पक्षपातपूर्ण नीति।

धार्मिक कारण

- समाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन।
- ब्रह्म समाज – 1828– राजाराम मोहन राय।
- आर्य समाज – 1875– स्वामी दयानन्द सरस्वती (वेदों की ओर लौटो)।
- 1856 – ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा विधवा पुनर्विवाह हेतु प्रयास।
- सर विलियम जोंस के एशियाटिक सोसाइटी (1784) द्वारा धर्म ग्रंथों का अनुवाद।
- प्रथम विश्वयुद्ध के कारण और परिणाम का भारत से अंतःसम्बन्ध।



कारण से अंतःसम्बन्ध
<ul style="list-style-type: none">■ युद्ध के बाद भारत में अंग्रेजों द्वारा जिम्मेवार सरकार का आश्वासन।■ रक्षा व्यय एवं महंगाई में वृद्धि।■ 1915–17 के बीच एनी बेसेंट एवं बाल गंगाधर तिलक द्वारा होमरूल लीग आन्दोलन■ देश विदेश में क्रान्तिकारी आन्दोलन (1913 में लाला हरदयाल द्वारा गदर पार्टी की स्थापना)■ लाल बाल पाल –लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल■ 1916 का लखनऊ अधिवेशन–काँग्रेस के गरम एवं नरम दल का एकीकरण।■ अध्यक्ष–अम्बिका चरण मजुमदार, काँग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता।■ भारतीय राजनीति में महात्मा गाँधी का उत्कर्ष।■ गाँधी जी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले।
परिणाम के साथ अंतःसम्बन्ध
<ul style="list-style-type: none">■ महंगाई अपने चरम पर।■ मजदूर, दस्तकार एवं किसान प्रभावित।■ आयात रुक गया फलतः भारतीय उद्योग फले-फूले एवं उद्योगपति वर्ग का जन्म।■ राष्ट्रवादी भावना के प्रवाह के बावजूद उपनिवेशों पर कठोर नियंत्रण का प्रयास।■ 1919का मांटेग्यु चेम्सफोर्ड सुधार द्वारा प्रांतीय परिषद में सदस्यों की संख्या में वृद्धि।■ प्रथम विश्व युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियों ने भारत में गाँधीवादी आन्दोलन के लिए पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

राष्ट्रीय आन्दोलन के चरण

प्रथम चरण 1885–1905	द्वितीय चरण 1905–1919	तृतीय चरण 1919–1947
		असहयोग आन्दोलन (1920–22) सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930–1934) भारत छोड़ो आन्दोलन (1942)

असहयोग आन्दोलन (1920)

- सितम्बर 1920 के कलकत्ता अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन चलाने का निर्णय 1 दिसम्बर 1920 के नागपुर अधिवेशन में पुष्टि तथा स्वशासन की जगह स्वराज्य का लक्ष्य।
- प्रथम जन आन्दोलन क्योंकि व्यापक स्तर पर अधिकांश वर्गों की भागीदारी।

कारण

रॉलेट एक्ट (1919)

- बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद किया जा सकता था।
- काला कानून।
- कोई अपील नहीं, कोई दलील नहीं कोई वकील नहीं।
- रॉलेट एक्ट के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान अमृतसर में डॉ० सत्यपाल एवं सैफुद्दीन किचलु की गिरफ्तारी।

जालियाँवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919)

- गिरफ्तारी के विरोध में पंजाब में अमृतसर के जालियाँवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 को शांतिपूर्ण सभा पर जनरल डायर के आदेश से गोली चलाई गई जिससे सैकड़ों लोग मारे गए।
- रविन्द्र नाथ टैगोर ने नाईट एवं गाँधी जी ने कैसर-ए-हिंद की उपाधि त्याग दी।
- जालियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए हंटर समिति का गठन हुआ था।

खिलाफत का मुद्दा

- तुर्की के खलीफा को पुनर्स्थापित करने हेतु भारतीयों द्वारा 1919 में अंग्रेजों के खिलाफ किया गया आन्दोलन।

- 17 अक्टूबर 1919 को खिलाफत दिवस।
- अखिल भारतीय खिलाफत आन्दोलन के अध्यक्ष— महात्मा गाँधी।

कार्यक्रम

विध्वंसात्मक कार्य

- उपाधि एवं अवैतनिक पदों का त्याग।
- सरकारी एवं गैरसरकारी समारोहों का बहिष्कार।
- सरकारी स्कूल कॉलेज का बहिष्कार।
- विदेशी निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार।
- विधान परिषद चुनाव का बहिष्कार।

रचनात्मक कार्य

- न्यायिक कार्य पंचों द्वारा
- राष्ट्रीय विद्यालय एवं महाविद्यालय की स्थापना।
- स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना।
- चरखा एवं खादी को लोकप्रिय बनाना।
- तिलक स्वराज्य कोष की स्थापना।

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में 5 फरवरी 1922 को भीड़ द्वारा 22 पुलिसकर्मियों को जलाया जाना। तत्पश्चात् 12 फरवरी को बारदोली में बैठक कर गाँधी जी ने आन्दोलन स्थगित किया।

परिणाम

- खिलाफत के मुद्दे का अंत।
- हिन्दू-मुस्लिम एकता प्रभावित।
- स्वराज्य का लक्ष्य अपूर्ण।
- काँग्रेस का मजबूत संगठनात्मक ढांचा का निर्माण।
- अंग्रेजी सत्ता की नींव हिली।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930) —दूसरा जन आन्दोलन

कारण

साइमन कमीशन

- भारत में संवैधानिक सुधार पर विचारार्थ नवम्बर 1927 में गठित।
- 7 सदस्यीय श्वेत कमीशन जिसमें एक भी भारतीय नहीं थे।
- 3 फरवरी 1928 को बम्बई में पहुँचने के साथ ही विरोध प्रदर्शन शुरू।

नेहरू रिपोर्ट

- फरवरी 1928 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में दिल्ली में सर्वदलीय सम्मेलन जिसने बिरकेनहेड के संविधान निर्माण की चुनौती को स्वीकार का डोमिनियन स्टेट की दर्जा की मांग की।
- 1929–30 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी ने सरकार के खिलाफ वातावरण का निर्माण।

पूर्ण स्वराज की मांग

- 31 दिसम्बर 1929 को रावी नदी के तट पर लाहौर में जवाहर लाल नेहरू ने तिरंगा झंडा फहराया और स्वतंत्रता की घोषणा का प्रस्ताव पढ़ा।
- 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वतंत्रता मनाने की घोषणा।

गाँधी का समझौतावादी रुख

आन्दोलन प्रारंभ करने से पूर्व गाँधी जी ने वायसराय इरविन के सामने 11 सूत्री मांग रखा परन्तु उसने इंकार किया और दमनचक्र तेज कर दिया।

दांडी यात्रा

गाँधीजी 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से अपने 78 अनुयायियों के साथ 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुँच कर नमक कानून को तोड़कर आन्दोलन की शुरुआत की।

कार्यक्रम

- हर स्थान पर नमक कानून का प्रतीकात्मक विरोध।
- स्थानीय स्तर पर सरकारी कर का विरोध यथा— बिहार में चौकीदारी कर।
- महिलाएँ शराब की दूकान के आगे धरना देंगी।
- खादी एवं चरखा का उपयोग।

प्रसार

- पेशावर में सीमांत गाँधी खान अब्दुल गफ्फार खान द्वारा खुदाई खिदमतगार संगठन की स्थापना जिसे लाल कुर्ती भी कहा जाता है।

गाँधी इरविन पैक्ट

- सविनय अवज्ञा आन्दोलन की व्यापकता ने वायसराय इरविन को समझौता के लिए बाध्य किया।
- 5 मार्च, 1931 को गाँधी इरविन पैक्ट जिसे दिल्ली समझौता कहा जाता है।
- आन्दोलन स्थगित एवं गाँधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (लंदन) में भाग लेने पर सहमत परन्तु निराश लौटे।
- इरविन राजनैतिक बंदियों की रिहाई पर सहमत हुए।

परिणाम

- सामाजिक आधार का विस्तार।
- आर्थिक बहिष्कार से आयात पर प्रतिकूल प्रभाव फलतः भारतीय उद्योगों को लाभ।
- 1935 में भारत शासन अधिनियम पारित हुआ।

किसान आन्दोलन

चंपारण सत्याग्रह

- चंपारण के किसान अंग्रेजों के तीनकठिया पद्धति से पीड़ित थे जिसमें किसानों को अपनी भूमि के 3/20 हिस्से पर नील की खेती अनिवार्य।
- 1917 में गाँधी जी के चंपारण सत्याग्रह के परिणामस्वरूप तीनकठिया पद्धति समाप्त।

खेड़ा आन्दोलन

गुजरात के खेड़ा जिले में लगान वृद्धि के खिलाफ 22 जून 1918 को गाँधी जी का सत्याग्रह।

मोपला विद्रोह

1917 में केरल के मालावार तट पर किसानों का विद्रोह जिसके नेता अली मुसालियार थे।

वारदोली सत्याग्रह

फरवरी 1928 में गुजरात के वारदोली में लगान वृद्धि के खिलाफ बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में वारदोली सत्याग्रह जिसमें उन्हें सरदार की उपाधि मिली।

किसान सभा

- 1922-23 में शाह मुहम्मद जुबैर ने मुंगेर में किसान सभा की स्थापना की।
- स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा बिहटा और सोनपुर में 1929 में किसान सभा की स्थापना।
- 11 अप्रैल 1936 को लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष स्वामी सहजानन्द सरस्वती थे।

मजदूर आन्दोलन

- 1917 में अहमदाबाद मिल मजदूर के प्लेग बोनस की कटौती के खिलाफ गाँधीजी के नेतृत्व में आन्दोलन हुआ फलतः बोनस बहाल किया गया। राशि 35% निर्धारित।
- 31 अक्टूबर 1920 को कांग्रेस द्वारा अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक) की स्थापना, जिसके अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे।
- मार्च 1929 में वामपंथी नेताओं के विरुद्ध मेरठ षडयंत्र के नाम पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया।

जनजातीय आन्दोलन

- आंध्र प्रदेश में 1916 में रंपा विद्रोह जिसके नेता अल्लूरी सीताराम राजू थे।
- उड़ीसा में 1914 में खोंड विद्रोह हुआ।
- 1914-1920 तक छोटानागपुर के उराँव जनजातियों का अहिंसक आन्दोलन (ताना भगत आन्दोलन) जिसके नेता जतरा भगत थे।

विभिन्न दल

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- मद्रास महाजन सभा — 1884
- इंडियन एसोसिएशन — 1876
- 28 दिसम्बर 1885 को बम्बई के सर गोकुल दास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना जिसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे।
- 1907 के सुरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन नरम एवं गरम दल में। अध्यक्ष रास बिहारी घोष थे।

कम्युनिष्ट पार्टी

- 1920 में मानवेन्द्र नाथ राय ने ताशकन्द में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।
- दिसम्बर 1925 में सत्यभक्त ने कानपुर में भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी की स्थापना की।
- 1929 में एन0एम0 जोशी द्वारा ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन (AITUF) की स्थापना।
- अक्टूबर 1934 में बम्बई में कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना, जिसके नेता जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, नरेन्द्र देव थे।
- वामपंथ का प्रसार मजदूर संघ एवं किसानों के बीच बढ़ रहा था।

मुस्लिम लीग

- फूट डालो और राज करो की नीति के तहत अंग्रेजों ने मुसलमानों से एक अलग संगठन बनाने की बात की।
- अक्टूबर 1906 में मोहसिन उल मुल्क ने आगा ख़ाँ के नेतृत्व में वायसराय मिंटो से मुलाकात की। अतः 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की नींव रखी गई।
- मुस्लिम लीग की मांगों के आधार पर 1909 के मार्ले मिंटो सुधार में साम्प्रदायिकता का बीज बोया गया और अंततः भारत का विभाजन हुआ।

स्वराज पार्टी

- 1922 के गया अधिवेशन में स्वराज पार्टी की स्थापना की घोषणा।
- मार्च 1923 में स्वराज पार्टी का प्रथम सम्मेलन इलाहाबाद में।
- नेता—चितरंजन दास, मोती लाल नेहरू।
- स्थापना का कारण—निर्वाचन में भाग लेकर सरकार के कामकाज में अवरोध पैदा करना।

उद्देश्य

- 1919 के सुधार अधिनियम में सुधार।
- कौंसिल में प्रवेश कर सरकार की गलत नीतियों का पर्दाफाश कर जनमत तैयार करना।
- ब्रिटिश दमनकारी नीतियों का विरोध करना।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर०एस०एस०)

- मुख्य अवधारणा— हिन्दू—हिन्दूत्व, हिन्दू राष्ट्र।
- 1925 में के०बी० हेडगेवार ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की।

उद्देश्य :

हिन्दू नवयुवकों में अनुशासित एवं चारित्रिक भावना का विकास कर राष्ट्र निर्माण करना।

अन्य विस्मरणीय तथ्य :

- ✓ वर्ष 1915 में हरिद्वार में मदन मोहन मालवीय ने हिन्दू महासभा की स्थापना की।
- ✓ गाँधीजी 1893 में दक्षिण अफ्रीका गए एवं 1915 में भारत लौटे।
- ✓ गुजरात के साबरमती आश्रम की स्थापना 1915 में गाँधी जी ने किया।
- ✓ वर्ष 1930 में चटगाँव छापामार दल का नेतृत्व सूर्यसेन ने किया था जिनका उपनाम मास्टर दा था। रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में स्वामी विवेकानन्द ने किया।
- ✓ करो या मरो – महात्मा गाँधी।
- ✓ जय हिन्द, दिल्ली चलो – सुभाषचन्द्र बोस।

- ✓ सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है – राम प्रसाद विस्मिल।
- ✓ अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटेन विश्व का पहला देश बना, जहाँ कृषि एवं उद्योग क्षेत्र में मशीनीकरण प्रारंभ हुआ और औद्योगीकरण के एक नये सुग का सूत्रपात हुआ।

◆◆◆